पटना विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह के अवसर पर महामहिम राज्यपाल श्री फागू चौहान का सम्बोधन

(दिनांक–21.05.2022, समय– पूर्वाह्न– 10 : 50 बजे, स्थान– एस०के० मेमोरियल हॉल, पटना)

पटना विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में शामिल होकर मुझे हार्दिक खुशी हो रही है। ज्ञान की भूमि बिहार प्राचीन काल से ही शिक्षा का प्रमुख केन्द्र रहा है। यहाँ के नालन्दा एवं विक्रमशिला विश्वविद्यालय न केवल भारतवर्ष बल्कि पूरे विश्व में ज्ञान के केन्द्र के रूप में जाने जाते थे।

पटना विश्वविद्यालय भारतीय उपमहाद्वीप का आठवाँ सबसे पुराना विश्वविद्यालय है, जिसका इतिहास सीधे तौर पर आधुनिक बिहार के इतिहास से जुड़ा हुआ है। राज्य के शैक्षणिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक एवं आर्थिक विकास की दशा एवं दिशा तय करने में इस विश्वविद्यालय का अमूल्य योगदान रहा है। इस विश्वविद्यालय ने विगत 105 वर्षों में अनेक विभूतियों को तैयार किया है, जिन्होंने विभिन्न क्षेत्रों में बिहार एवं देश को एक नई राह दिखाई है। यहाँ के मेधावी एवं प्रतिभाशाली विद्यार्थियों ने भारत एवं विदेशों में विभिन्न महत्त्वपूर्ण पदों पर अपनी सेवायें दी हैं।

पटना विश्वविद्यालय शिक्षा के क्षेत्र में आज भी अग्रणी भूमिका निभा रहा है तथा यहाँ के विद्वान शिक्षकों के कुशल मार्गदर्शन में विद्यार्थीगण अपनी मेहनत से प्रगति का मार्ग प्रशस्त कर रहे हैं। इस विश्वविद्यालय द्वारा कोरोना महामारी के कठिन दौर में भी सुचारु रूप से ऑनलाईन कक्षायें जारी रखना, आन्तरिक परीक्षाएँ आयोजित करना एवं शिक्षकों द्वारा ऑनलाईन सामग्री तैयार कर विद्यार्थियों को सुलभ कराना अत्यंत सराहनीय है। इस महामारी के कारण विश्वविद्यालय ने अपने कई विद्वान शिक्षकों एवं लगनशील कर्मचारियों को खोया है। मैं उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

बिहार एक प्रतिभासम्पन्न राज्य है जहाँ के युवा देश–विदेश में यहाँ का परचम लहरा रहे हैं। किन्तु आज उच्च शिक्षा को रोजगारपरक बनाने के लिए गंभीर प्रयास करने की आवश्यकता है। इस हेतु व्यावसायिक शिक्षा और कौशल प्रशिक्षण को उच्च शिक्षा के पाठ्यक्रम में शामिल कर विद्यार्थियों की क्षमता का विकास करना महत्वपूर्ण है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 में भी इस बात पर जोर दिया गया है।

नई शिक्षा नीति का उद्देश्य 21वीं सदी की जरूरतों एवं चुनौतियों को ध्यान में रखकर स्कूल और कॉलेज की शिक्षा को अधिक समग्र बनाते हुए भारत को एक ज्ञान आधारित जीवंत समाज और ज्ञान की वैश्विक महाशक्ति में बदलना है। साथ ही, ऐसे युवाओं को तैयार करना है जो तर्कसंगत विचार करने और कार्य करने में सक्षम होने के साथ–साथ उच्च मानवीय मूल्यों को धारण करने की क्षमता रखते हों। समानता, गुणवत्ता, जबाबदेही और सबके लिए आसान पहुँच के आधार स्तम्भों पर तैयार यह नीति नवोन्मेषी, प्रभावी तथा संवादात्मक है, ताकि समावेशी और बहुलतावादी समाज के निर्माण में सहयोग मिल सके।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के लागू होने पर शिक्षकों का उत्तरदायित्व काफी बढ़ जायेगा। शिक्षकों को नवीनतम जानकारी रखनी होगी, नई तकनीकों को नियमित रूप से सीखना होगा तथा प्रासंगिक बने रहने के लिए वैश्विक शिक्षण समुदाय के साथ प्रतिस्पर्धा करनी होगी।

राज्य के सभी विश्वविद्यालयों को इस दिशा में सचेष्ट रहने की आवश्यकता है। मुझे पूरा विश्वास है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति के कार्यान्वयन और इसके उद्देश्यों की पूर्ति में पटना विश्वविद्यालय महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायेगा।

आज के दीक्षांत समारोह में उपाधि प्राप्त करनेवाले छात्र– छात्राओं को मैं हार्दिक बधाई देता हूँ। मुझे बताया गया है कि 970 विद्यार्थियों को पी0 एच0 डी0, स्नातकोत्तर एवं पी0जी0 डिप्लोमा की डिग्रियाँ प्रदान की जा रही हैं तथा जिन 38 छात्र–छात्राओं को परीक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए स्वर्णपदक प्रदान किया जा रहा है, उनमें 20 बेटियाँ हैं। बिहार की ऐसी बेटियों पर हमें गर्व है और उनसे उम्मीद है कि वे अपने क्षेत्र में सर्वोच्च मुकाम हासिल कर राष्ट्र के विकास और मानवता के कल्याण में अपना सर्वोत्तम योगदान देंगी।

मेरी कामना है कि पटना विश्वविद्यालय अपनी गरिमा को बनाये रखते हुए शिक्षण के क्षेत्र में सर्वोच्च मुकाम हासिल करे तथा यहाँ के छात्र–छात्राओं में विद्वता के साथ–साथ नैतिक मूल्यों को धारण करने एवं उच्चादर्शों पर चलने की यथेष्ट क्षमता हो।

दीक्षांत दिवस के अवसर पर मैं एक बार पुनः पटना विश्वविद्यालय परिवार को बधाई देता हूँ और छात्र–छात्राओं के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ। आप सबको बहुत–बहुत धन्यवाद।

जय हिन्द!

***